www.prabhupuja.com

आरती कुंजबिहारी की

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला ।
श्रवन में कुण्डल झलकाला,
नंदके आनँद नँदलाला ।।
नन्द के आनंद , मोहन बृजचंद , परमानंद,
राधिका रमण बिहारी की
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतनमें ठाढ़े बनमाली ,
भ्रमन-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चंद्र-ली झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारी की ।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
कनकमय मोर-मुकुठ बिलसै, देवता दरसनको तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी ।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी सिव सीस , जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी ।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनु, बज रही बृन्दाबन बेनु,
चहूँदिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन भिखारीकी ।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।

PrabhuPuja

www.prabhupuja.com